

November 2020

Monthly Magazine
Year 6 Issue 11

Satyug

नारायण रेकी सतसंग परिवार
In Giving We Believe

सतयुग



हमारा उद्देश्य

“हर इंसान तन, मन, धन व संबंधों से स्वस्थ हो
हर घर में सुख, शांति समृद्धि हो व
हर व्यक्ति उन्नति, प्रगति व सफलता प्राप्त करे।”

बुधवार सतसंग

प्रत्येक बुधवार प्रातः ११ बजे से ११.३० बजे तक

फेसबुक लाइव पर

सतसंग में भाग लेने के लिए नारायण रेकी सतसंग परिवार के फेसबुक पेज को ज्वाइन करें और सतसंग का आनंद लें।

नारायण गीत

नारायण-नारायण का उद्घोष जहाँ
राम राम मधुर धुन वहाँ
सबको खुशियाँ देता अपरम्पार,
जीवन में लाता सबके जो बहार
खोले, उन्नति, प्रगति, सफलता के द्वार,
बनाता सतयुग सा संसार
वो है, वो है हमारा नारायण रेकी सतसंग परिवार
हमारा सन.आर.सस.पी, प्यारा सन.आर.सस.पी.
प्यार, आदर, विश्वास बढ़ाता
रिश्तों को मजबूत बनाता, मजबूत बनाता
परोपकार का भाव जगाता
सच्चाई, नम्रता सेवा में विश्वास बढ़ाता
सत को करता अंगीकार
बनाता सतयुग सा संसार
वो है, वो है हमारा नारायण रेकी सतसंग परिवार
मुस्कान के राज बताता,
तन, मन, धन से देना सिखलाता
हमको जीना सिखलाता
घर-घर प्रेम के दीप जलाता
मन क्रम से जो हम देते वही लौटकर आता, वही लौटकर आता
बनाता सतयुग सा संसार
वो है, वो है हमारा नारायण रेकी सतसंग परिवार
सन.आर.सस.पी.,सन.आर.सस.पी.

॥ ॐ ॥

पावन वाणी



प्रिय नारायण प्रेमियों,

॥नारायण नारायण॥

पिछले दिनों, नारायण शास्त्र की एक पात्र विजयलक्ष्मी ने बहुत ही खूबसूरत बात कही, जब बात रिश्तों की हो तो निर्मल नदी की तरह बहो और जब बात सिद्धांतों की हो तो चट्टान की तरह अड़ जाओ।

विजयलक्ष्मी जी की बात ने मुझे बहुत अधिक प्रभावित किया और जीवन के प्रति एक नई दिशा दी। हम प्रतिदिन दिल और दिमाग के बीच द्वन्द में जीते हैं। कभी हमें अपनी बुद्धि से निर्णय लेना पड़ता है कभी दिल से। सतसंग कहता है जब कभी बुद्धि (दिमाग) या मन (दिल) में से किसी एक को चुनना पड़े तो सदैव मन की सुनें क्योंकि मन वह स्थल है जहाँ उस परम पिता का वास है और मन से निकली बात परमात्मा की ही आवाज है, कल्याण की आवाज है, सच्चाई की आवाज है भलाई की आवाज है और सार्थक जीवन की ओर ले जाने का मार्ग है।

मनुष्य जीवन स्व सुधार की प्रक्रिया है और यह प्रक्रिया अपने सर्वोत्तम रूप में तब संभव है जब आपसी घनिष्ठ संबंध प्यार, आदर, विश्वास और प्रशंसा से भरे हो। ऐसा तभी हो सकता है जब आप अपने संबंधों को सही गलत के हासिए से बाहर रख अपने मन की बात सुनें कि यह संबंध मेरा है। रिश्ता मेरा है और इसे तन, मन, धन से सर्वोत्तम देना मेरा कर्तव्य है। जब आप एक बार इस राह पर चल पड़ते हैं तो जीवन खुशियों से भर जाता है। जीवन का हर क्षेत्र सफलता से भर जाता है। आप तन से मन से तो स्वस्थ होते ही हैं धन भी आपके जीवन में प्रचुरता से आता है।

मन आपका दिशासूचक यंत्र है यदि आप उसके मुताबिक अपने जीवन को आगे बढ़ाएंगे तो प्रिय पाठकों, सहज ही सप्त सितारा जीवन के हकदार बन जाएंगे।

शेष कुशल

R. modi

॥नारायण नारायण॥

-: संपादिका :-

संध्या गुप्ता

09820122502

-: प्रधान कार्यालय :-

राजस्थानी मंडल कार्यालय

बेसमेंट रजनीगंधा बिल्डिंग ग, कृष्ण वाटिका मार्ग,
गोकुल धाम, गोरगांव (ई), मुंबई - ४०० ०६३.

-: क्षेत्रीय कार्यालय :-

| | | |
|---------------------|-------------------------|-----------------------------|
| अहमदाबाद | जैविनी शाह | : 9712945552 |
| आगरा | अंजनामिन्तल | : 9368028590 |
| अकोला | रिया / शोभा अग्रवाल | : 9075322783/ 9423102461 |
| अमरावती | तरुलता अग्रवाल | : 9422855590 |
| बंगलोर | शुभांगी अग्रवाल | : 9341402211 |
| बंगलोर | कनिष्का पोद्दार | : 7045589451 |
| बड़ोदा | दीपा अग्रवाल | : 9327784837 |
| भंडारा | गीता शारदा | : 9371323367 |
| भोलवाड़ा | रेखा चौधरी | : 8947036241 |
| बस्ती | पूनम गाडिया | : 9839582411 |
| भोपाल | रेनुगदानी | : 9826377979 |
| बीना (मध्यप्रदेश) | रश्मि हुकट | : 9425425421 |
| बनारस | अनीता भालोरिया | : 9918388543 |
| दिल्ली (पश्चिम) | रेनु बिज | : 9899277422 |
| दिल्ली (पूर्व) | मीनू कौशल | : 9717650598 |
| दिल्ली (प्रीतमपुरा) | मेघा गुप्ता | : 9968696600 |
| धुले | कल्पना चौराडिया | : 9421822478 |
| डिब्रूगढ़ | निर्मलाकेडिया | : 8454875517 |
| धनबाद | विनीता दुधानी | : 9431160611 |
| देवरिया | ज्योति छपरिया | : 7607004420 |
| गुवाहाटी | सरला लाहोटी | : 9435042637 |
| गुडगाँव | शीतल शर्मा | : 9910997047 |
| गोंदिया | पूजा अग्रवाल | : 9326811588 |
| गाजियाबाद | करुणा अग्रवाल | : 9899026607 |
| गोरखपुर | सविता नांगलिया | : 9807099210 |
| हैदराबाद | स्नेहलता केडिया | : 9247819681 |
| हरियाणा | चन्द्रकला अग्रवाल | : 9992724450 |
| हिंगनघाट | शीतल टिब्रेवाल | : 9423431068 |
| इंदौर | धनश्री शिरालकर | : 9324799502 |
| इचलकरंजी | जयप्रकाश गोयनका | : 9422043578 |
| जयपुर | सुनीता शर्मा | : 9828405616 |
| जयपुर | प्रीती शर्मा | : 7877339275 |
| जालना | रजनी अग्रवाल | : 8888882666 |
| झुंझुनू | पुष्पा टिब्रेवाल | : 9694966254 |
| जलगाँव | कला अग्रवाल | : 9325038277 |
| कानपुर | नीलम अग्रवाल | : 9956359597 |
| खानगाँव | प्रदीप गरोदिया | : 8149738686 |
| कोल्हापुर | जयप्रकाश गोयनका | : 9422043578 |
| कोलकता | सी.एसगीता चांडक | : 9330701290 |
| कोलकता | श्वेता केडिया | : 9831543533 |
| मालेगाँव | आरती चौधरी/रेखा गरोडिया | : 9673519641/ 9595659042 |
| मोरबी (गुजरात) | कल्पना जोशी | : 8469927279 |
| नागपुर | सुधा अग्रवाल | : 9373101818 |
| नांदेड | चंदा काबरा | : 9422415436 |
| नासिक | सुनीता अग्रवाल | : 9892344435 |
| नवलगढ़ | ममता सिंगरोडिया | : 9460844144 |
| पिछौरा | स्मिता मुकेश भरतिया | : 9420068183 |
| परतवाड़ा | राखी अग्रवाल | : 9763263911 |
| पूना | आभा चौधरी | : 9373161261 |
| पटना | अरविंद कुमार | : 9422126725 |
| पुरुलिया | मृदु राठी | : 9434012619 |
| रायपुर | अदिति अग्रवाल | : 7898588999 |
| रांची | आनंद चौधरी | : 9431115477 |
| रामगढ़ | पूर्वी अग्रवाल | : 9661515156 |
| राउकेला | उमा देवी अग्रवाल | : 9776890000 |
| शोलापुर | सुवर्णा बल्दावा | : 9561414443 |
| सूरत | रंजना गाडिया | : 9328199171 |
| सीकर | सुष्मा अश्रवाल | : 9320066700 |
| सिलीगुड़ी | आकांक्षा मुंघडा | : 9564025556 |
| विशाखापत्तनम | मंजू गुप्ता | : 9848936660 |
| उदयपुर | गुणवंती गोयल | : 9223563020 |
| विजयवाड़ा | किरण झंवर | : 9703933740 |
| वर्धा | अन्नपूर्णा | : 9975388399 |
| यवतमाल | वंदना सूचक | : 9325218899 |

संपादकीय

॥ ५ ॥

प्रिय पाठकों,

॥ नारायण नारायण ॥

मन और बुद्धि हमारे जीवन के दो अश्व हैं जिन के समुचित संतुलन पर हमारे जीवन की गाड़ी सरपट दौड़ती है। सार्थक जीवन जीने के लिए यह आवश्यक है कि इनके बीच उचित सामंजस्य हो। यदि बुद्धि तीव्र गति से एक दिशा में दौड़ेगी और मन किसी और दिशा में तो जीवन का जो आनंद है उससे हम वंचित रह जाएंगे। कई बार हमें अपनी बुद्धि को प्राथमिकता देनी पड़ती है कई बार मन के बेलगाम घोड़े को थामना पड़ता है। मन और बुद्धि के इसी संयोजन को जानने की कोशिश करेंगे सतयुग के इस अंक में।

आप सभी बुद्धि और मन के उचित तालमेल के साथ सप्तसितारा जीवन के लिए अग्रसर रहें इन शुभकामनाओं के साथ।

आपकी अपनी
संध्या गुप्ता

अंतर्राष्ट्रीय कार्यालय :

| | | |
|-----------------------|----------------------|----------------|
| नेपाल | रिचा केडिया | 977985-1132261 |
| आस्ट्रेलिया | रंजना मोदी | 61470045681 |
| बैंकाक | गायत्री अग्रवाल | 66897604198 |
| कनाडा | पूजा आनंद | 14168547020 |
| दुबई | विमला पोद्दार | 971528371106 |
| शारजहा | शिल्पा मांजरे | 971501752655 |
| जकार्ता | अपेक्षा जोगनी | 9324889800 |
| लन्दन | सी.ए. अक्षता अग्रवाल | 447828015548 |
| सिंगापुर | पूजा गुप्ता | 6591454445 |
| डबलिनओहियो अमेरिका | स्नेह नारायण अग्रवाल | 1-614-787-3341 |

आपके विचार सकारात्मक सोच पर आधारित आपके लेख, काव्य संग्रह आमंत्रित है - सतयुग को साकार करने के लिये/आपके विचार हमारे लिये मूल्यवान हैं। आप हमारी कोशिश को आगे बढ़ाने में हमारी मदद कर सकते हैं। अपने विचार उदघार, काव्य लेखन हमें पत्र द्वारा, ई-मेल द्वारा भेज सकते हैं।
हमारा ई-मेल है 2014satyug@gmail.com

we are on net



narayanreikisatsangparivar

@narayanreiki

प्रकाशक : नारायण रेकी सतसंग परिवार
मुद्रक : श्रीरंग प्रिन्टर्स प्रा. लि. मुंबई.
Call : 022-67847777

॥ नारायण नारायण ॥



बुद्धि और मन दो ऐसे अवयव हैं जिनके ऊपर हमारे संपूर्ण जीवन की आधार शिला रखी जाती है। सामान्यतः बुद्धि और मन को एक ही मान लिया जाता है पर इन दोनों में एक बहुत ही सूक्ष्म अंतर है जो इन दोनों के बीच वृहद अंतर को परिलक्षित करता है।

बुद्धि आपकी वो क्षमता है जिस के आधार पर आप हर परिस्थिति, वस्तु, व्यक्ति को तार्किकता की कसौटी पर कसते हैं और फिर उसके बारे में निर्णय लेते हैं। किन्तु मन, हमारे भावों, से हमारे संवेगों से, हमारे दिल से जुड़ा होता है। मन तर्क नहीं करता उसे जो प्रभावित करता है उसे वह स्वीकार कर लेता है। बुद्धि उचित अनुचित का संशय मन के भीतर पैदा कर मनुष्य के भीतर तार्किक क्षमता को विकसित करती है जिसके आधार पर व्यक्ति उचित अनुचित का निर्णय कर सफलता के मार्ग को प्रशस्त करता है पर सार्थक जीवन के लिए मन की आवाज ही सर्वोत्तम माध्यम है।

बुद्धि आपकी कार्य कुशलता को बढ़ाती है और मन आपकी व्यवहार कुशलता को बढ़ाता है। बुद्धि सही गलत का पैमाना है और मन आपके भावों की अभिव्यक्ति है। मन आत्मा से जुड़ा होता है और बुद्धि शरीर से जुड़ी होती है। मन का प्रभाव व्यापक होता है। जितना अधिक मन का जुड़ाव होगा उतना ही अधिक वह सामने वाले व्यक्ति, को, परिस्थिति को प्रभावित करेगा। आपने यह देखा भी होगा और महसूस भी किया होगा कि बच्चे के लिए उसकी माँ अनमोल होती है चाहे वह बुद्धिमान हो चाहे... क्योंकि माँ अपने बच्चे से मन से भावों से जुड़ी होती है और जब मन और भावों का जुड़ाव होता है तो रिश्तों में अपनत्व पनपता है, विश्वास पनपता है, प्यार पनपता है, आदर और सम्मान पनपता है और मनुष्य प्रसन्नचित्त रहता है। प्रसन्नचित्त मन तन, मन धन से स्वस्थ रहते हुए सहज ही एक सार्थक जीवन जीता जाता है। मन का जुड़ाव जितना अधिक गहरा होगा उसका प्रभाव उतना ही अधिक होगा।

मन की प्रवृत्ति प्रसन्नचित्त, आनंदमय रहने की होती है। मन, निर्मल, स्वच्छ, होता है। मन से किया गया हर एक कार्य सफल होता है, सर्वोत्तम होता है। मन ईश्वर का एक बेशकीमती उपहार है। मन व्यक्ति की पहचान है अंतः मन को साधना अति आवश्यक है, क्योंकि हमारा मन सीधे उस ईश्वर से जुड़ा होता है।

हर व्यक्ति सफल के साथ- साथ सार्थक जीवन जीना चाहता है। इसके लिए आवश्यक है कि बुद्धि और मन के बीच संतुलन पैदा किया जाए। यह संतुलन तब आएगा जब बुद्धि द्वारा दिए गए तर्कों में मन के भावों, मन के संवेगों को जोड़ा जाए। किसी भी बात पर निर्णय लेने से पहले मन की जरूर सुनें। मन की आवाज आपके भीतर अवस्थित उस परम शक्ति की आवाज होती है जो आपको वह करने के लिए प्रेरित करती है जो उचित है और सबके भलाई के लिए। यदि कभी आपकी बुद्धि और मन के बीच जंग छिड़ जाए तब सदैव मन की सुनें क्योंकि मन ही आपकी सफलता का आधार है।

राज दीदी और नारायण रेकी सतसंग परिवार की पद्धतियां मन और बुद्धि के बीच समन्वय लाने के लिए सर्वोत्तम हैं। सुबह उठ कर की जाने वाली प्रार्थना, सेल्फ हीलिंग में दिए जाने वाले सकारात्मक संज्ञान, शांति कलश मेडिटेशन, रात को किया जाने वाला ध्यान मन और बुद्धि के भीतर बड़ी ही खूबसूरती से समन्वय

स्थापित करते हैं।

हमारी बुद्धि और मन तभी सुचारू रूप से कार्य करते हैं जब हमारा तन स्वस्थ हो और तन को स्वस्थ रखने के लिए योग, प्राणायाम और मोर्निंग वाक, तैराकी या अन्य किसी भी प्रकार का व्यायाम किया जा सकता है। तन की अस्वस्थता हमारी बुद्धि और मन दोनों को प्रभावित करती है। आपने अकसर यह महसूस किया होगा की जब हम शारीरिक रूप से स्वस्थ नहीं होते तब हमारा मन भी अच्छा महसूस नहीं करता और बुद्धि से भी हम सही और उचित निर्णय लेने में सक्षम नहीं होते हैं।

ध्यान मन और बुद्धि के बीच चलने वाली कशमकश और तर्क वितर्क के बीच संतुलन स्थापित कर मनुष्य को उचित निर्णय लेने में मदद करता है।

प्रार्थना, ध्यान, और उचित शारीरिक व्यायाम हमारे तन को स्वस्थ रखता है और स्वस्थ शरीर में ही स्वस्थ बुद्धि और स्वस्थ मन का वास होता है और स्वस्थ तन, मन और बुद्धि का उचित समन्वय ही एक सार्थक और सफल जीवन का मार्ग प्रशस्त करता है।

नारायण उत्सव २०२०

दिनांक:- ८ नवम्बर

दिन :- रविवार

समय :- १०.५५

जगह :- यू ट्यूब

(नारायण रेकी सतसंग परिवार)



नारायण उत्सव के लिए साधना जो सभी सत्संगियों को नियमपूर्वक करनी है।

हर चक्र पर इस उद्देश्य से:

नारायण आशीर्वाद व नारायण शक्ति से मैं (अपना पूरा नाम)

शांत व प्रसन्न हूं मैं सभी में नारायण के दर्शन करती/करता हूं सभी के साथ

मेरे संबंध लव रेस्पेक्ट फेथ केयर से परिपूर्ण हैं।

राम राम २१/५६/१०८ हर चक्र पर आपकी इच्छानुसार।

नारायण धन्यवाद

॥नारायण नारायण॥



नारायण रेकी सत्संग परिवार का मिशन है कि हर व्यक्ति सप्त सितारा जीवन जिए जो सरल, सहज, सुंदर, स्वस्थ, सफल, समृद्ध, सम्पन्न और सार्थक हो। साथ ही साथ बरकत बढ़ोतरी प्रचुरता से भरपूर हो।

हमारे साप्ताहिक सतसंगों में लघु कथाओं के माध्यम से संदेश दिए जाते हैं जो ज्यादातर जीवन की सत्य घटनाओं पर आधारित होते हैं। यदि सत्संगियों ने उन संदेशों को आत्मसात कर लिया, तो निश्चित रूप से उनका जीवन सप्त सितारा होता चला जाएगा। प्रस्तुत है ऐसे ही कुछ संदेश :-

- १) सार्थक जीवन के लिए जीवन में खुश रहना अति आवश्यक है। खुश रहना बहुत आसान है यदि आप दो आदतों को अपना लेते हैं एक हर चीज के लिए ईश्वर का आभार व्यक्त करना और दूसरे जीवन में छोटी-छोटी चीजों का जश्न मनाना।
- २) शिकायतें, नफरत, ईर्ष्या जैसी नकारात्मक भावनाएं दीमक की तरह हैं जो हमारे शरीर के अंदर घुसकर हमें बीमार कर देती हैं। यह हमारे स्वास्थ्य, समृद्धि, खुशहाली और संबंधों को प्रभावित करती है। हमें अपने सिस्टम से इन नकारात्मक भावनाओं को दूर करना चाहिए और अपने जीवन में प्रशंसा को अपनाना चाहिए।
- ३) जब आप दूसरे व्यक्ति की गुणवत्ता के बारे में सोचते हैं तो तुरंत आपके चेहरे पर मुस्कान आ जाती है .. इससे पहले कि आप दूसरे व्यक्ति को बधाई दें यह वह आशीर्वाद है जो आपको ब्रह्मांड से प्राप्त होता है।
- ४) आपके भीतर सकारात्मक ऊर्जा का प्रवाह होता है और आपकी सकारात्मक ऊर्जा का स्तर बढ़ जाता है।
- ५) जब आप दूसरे व्यक्ति की प्रशंसा करते हैं, तो आप अच्छा महसूस करते हैं।
- ६) जब आप सराहना करते हैं तो आप दूसरे व्यक्ति को खुशी देते हैं और आपको खुशी कई गुना होकर मिलती है।
- ७) जब आप दूसरे व्यक्ति की सराहना करते हैं तो वह भी सराहना करता है।
- ८) जब आप अपने संबंध की सराहना करते हैं तो आपका स्वास्थ्य मजबूत होता है और धन भी बढ़ता है।
- ९) जब आपको खुशी और सराहना मिलती है आपकी सहनशक्ति दुगुनी हो जाती है।
- १०) कल्पना कीजिए कि आपने सभी नकारात्मक भावनाओं को एक बैग में पैक कर दिया है और उन्हें अपने जीवन से दूर कर दिया है। अब कल्पना करें, नारायण का, आपके गुरु, आपके माता-पिता और बड़ों का आशीर्वाद आप पर बरस रहा है क्योंकि आपने अपने जीवन में प्रशंसा को आत्मसात कर लिया है।
- ११) अपने घर से प्रशंसा की शुरुआत करें अपने जीवन साथी और अपने बच्चों की, अपने प्रियजनों की, परिवार के सदस्यों की सराहना करें। और स्वस्थ खुशहाल सामंजस्यपूर्ण और समृद्ध जीवन जिए।

- १२) जीवन में आने वाली हर समस्या का समाधान तुरंत ढूंढें। यदि हम समस्या का सामना तुरंत नहीं करते हैं तो यह कई गुना बढ़ जाती है, अगर हम अपनी समस्या से जुड़े व्यक्ति से बचते हैं तो उसका गुस्सा और अहंकार बढ़ जाता है।
- १३) अगर आपको कोई समस्या आती है तो पानी का गिलास लें, भगवान से प्रार्थना करें, उसके सामने समर्पण करें। पानी पिएं और फिर जाकर संबंधित व्यक्ति से मिलें, उससे बात करें, ज्यादातर समस्या का समाधान हो जाएगा।
- दीदी ने सफल होने की अपनी तकनीकों को साझा किया
- क) ईश्वर द्वारा उपहार स्वरूप दिए गए जीवन से प्रेम करें।
- ख) जो व्यवहार आप चाहते हैं आपके साथ किया जाए वैसा ही व्यवहार दूसरों के साथ करें।
- ग) अपना काम खुशी और उत्साह के साथ करें।
- घ) सभी के प्रति सकारात्मक रवैया रखें
- १४) समाधान विजिटिंग मिनट्स:- एक पेपर में सभी समस्याओं को लिख लें । फिर उन्हें पढ़ें जो भी समस्या अधिक विचार योग्य नहीं लगती, उन्हें सूची से हटा दें । फिर जो समस्याएं ऐसी लगती जिनका उनके पास कोई समाधान नहीं है उन्हें भगवान के सामने आत्मसमर्पण कर दें । शेष समस्याओं के बारे में सोच विचार के लिए सुबह १५ मिनट का समय निर्धारित करें और एक निश्चित स्थान पर बैठें और समस्या के बारे में सोचें। जब आप समस्याओं से दूर भागते हैं तो आपको तनाव और गुस्सा आता है। ये नकारात्मक भावनाएं आपके स्वास्थ्य, धन और संबंधों को प्रभावित करती हैं। नकारात्मक तरंगें आपके शरीर से बाहर निकलती हैं और आपके घर के वातावरण को प्रदूषित करती हैं और बच्चे पढ़ाई पर ध्यान केंद्रित नहीं कर पाते हैं। यह आपकी सफलता और प्रगति को प्रभावित करता है।
- १५) भगवद् गीता में लिखा है कि जो हुआ अच्छा हुआ, जो हो रहा है अच्छा हो रहा है, जो होगा वह भी अच्छा ही होगा। यह तभी फलित होता है जब हम अच्छा काम करते हैं।
- १६) शब्दों में बहुत ताकत है, उनमें आपके जीवन को बदलने की क्षमता है इसलिए हमेशा अच्छे सकारात्मक शब्दों का उपयोग करें।
- १७) 'हाँ, मैं कर सकता हूँ' 'पूछिए और मांगिए' ये दो जादूई शब्द हैं।
- १८) आपको जिन बातों पर यकीन करते हैं आपको उस बात के सबूत मिलने लगते हैं।
- १९) अपने काम की गुणवत्ता में सुधार लाने के लिए आत्मनिरीक्षण करें।
- दोस्तों हम इस दुनिया में कुछ ही समय के लिए हैं, इससे पहले कि यह पूरा हो जाए जीवन में गुणों का विकास करें और किसी के जीवन में खुशी, आनंद, मुस्कुराहट, सफलता का कारण बनें।

मन जिसे अंग्रेज़ी में माइंड और बुद्धि जिसे अंग्रेज़ी में इंटेलेक्ट कहते हैं हर मानव को प्रदत्त क्षमताएँ हैं। ध्यान रखने की बात यह है कि मन स्थिति अनुसार हमारी बुद्धि पर प्रभाव पड़ता है। मन जैसा होता है, बुद्धि भी वैसी ही होती जाती है। हमारी बुद्धि सही रहे, इसके लिए हमें क्या करना होगा।

सर्वप्रथम मन को साधना होगा।

मन को किस प्रकार साधा जाय ?

- ▶ चिंतन व आत्मावलोकन करें कि आपका मन किन किन विषयों में फँसा है ?
- ▶ आपकी कामनाओं ने कही आपके उच्च ध्येय को आच्छादित तो नहीं कर दिया ?
- ▶ आपके लोभ ने कहीं आपको आपके श्रेय साधन से वंचित तो नहीं कर दिया ?
- ▶ आपके क्रोध या आपके अनुचित शब्दों ने कहीं आपके सबसे हितेशी व्यक्ति को दूर तो नहीं कर दिया ?
- ▶ आपने अपने मद में किसी की आंतरिक आवाज़ को अनसुना तो नहीं कर दिया ?
- ▶ आपके अहंकार ने कहीं आपकी निश्चलता की बलि तो नहीं चढ़ा दी ?

यह प्रश्न आपको एक बार पुनः आपकी शुद्ध स्वरूप पवित्र शक्तिशाली आत्मा से रूबरू कराएँगे और एक बार अगर आपकी आत्मा जाग गई तो फिर बुद्धि स्वतः ही सही रास्ते पर आ जाएगी क्योंकि आत्मा से शक्तिशाली कुछ भी नहीं है

ईश्वर ने हमें मन व बुद्धि की शक्ति से नवाज़ा है इसका सदुपयोग करने के लिए। यह मात्र संसाधन है जिनसे हम बाहरी व आंतरिक संसार से जुड़े हैं।

आस्तिक व सकारात्मक बुद्धि मन को वश में कर सदैव उन आदर्शों व मार्गों को अपनाती है जो मानव जीवन को सार्थक बनाने के पथ पर अग्रसर करते हैं। हम जन्म लेने के उच्च लक्ष्य को प्राप्त कर पाते हैं।

वहीं अगर मन स्वच्छंद हो अपनी मनमानी करता है तो बुद्धि भ्रमित हो जाती है और उसके लिए क्या श्रेयस्कर है, यह विवेक खो देती है। उदाहरण के लिए अगर वीकडे में रात को आठ बजे आपके मित्र का फ़ोन आता है कि चलो लेट नाइट शो देखने चलते हैं तब आपको देखना है कि आपका विवेक आपको क्या उत्तर देता है ? मन की सुनकर आप पिक्चर देखने जाते हैं या वश में किए हुए मन से, बुद्धि यह निगन्ध लेती है कि ऐसा करने से मेरा प्रातः का नियम अस्त व्यस्त हो जाएगा। अगर आप विद्यार्थी हैं तो कक्षा में नींद पूरी न होने के कारण ध्यान को एकाग्र नहीं कर पाएँगे या ऊँघेंगे। अगर आप कहीं कार्य करते हैं तो सुस्ती के कारण आप अपना सौ प्रतिशत नहीं दे पाएँगे।

प्रश्न यह उठता है कि मन को कैसे साधा जाए?

- ▶ वेद व्यास द्वारा रचित श्रीमद्भागवदगीता में वासुदेव श्री कृष्ण बहुत ही सरल शब्दों में मार्गदर्शन करते हैं :-

मनुष्य को चाहिए कि संपूर्ण इंद्रियों को वश में करके समाहित चित्त हुआ मेरे परायण स्थित होवे क्योंकि जिस पुरुष की इन्द्रियाँ वश में होती हैं, उसकी ही बुद्धि स्थिर होती है। तो हमारी युवा पीढ़ी को क्या करना होगा - मन सहित इन्द्रियों को वश में करना होगा क्योंकि मन से परे बुद्धि है और बुद्धि से परे आत्मा अतः अपने आत्मबल को जगाये और बुद्धि द्वारा मन पर विजय प्राप्त कर सत मार्ग का ही अनुसरण करें।



बच्चों की फुलवारी

॥ ५ ॥

मेरे घर के समीप एक सुव्यवस्थित बगीचा है। एक दिन गरज चमक के साथ आए आँधी तूफान और तेज हवाओं ने उस सुव्यवस्थित बगीचे का रूप बदल दिया। बगीचे में जगह-जगह पतियाँ बिखरी पड़ी थीं, बहुत सी शाखाएँ टूटी पड़ी थीं पूरा बगीचा कीचड़ और गंदगी से भरा हुआ था। माली आया उसने चारों ओर नज़र घुमाई और सफाई शुरू कर दी।

ऐसा ही हम जीवन में भी अनुभव करते हैं। कई बार ऐसा होता है की हमारे दिल और दिमाग के बीच का तूफान हमारे शांत और आनंदमय जीवन को हिला देता है। हम परेशान होते हैं पर हम सतसंग का सहारा लेकर अपने जीवन को उचित दिशा देने में समर्थ हो जाते हैं।

हम सतसंग में जाते हैं, पुस्तकें पढ़ते हैं, हम अच्छे लोगों की संगत में रहते हैं, फिर भी कभी-कभी किसी समय कुछ परिस्थितियाँ ऐसी होती हैं जो हमें परेशान करती हैं। यह वो समय होता है जब हमारे मन और दिमाग के बीच विचारों का मतभेद होता है। अनुभवों पर आधारित मन हमें एक दिशा में ले जाता है तो बुद्धि हमें एक अन्य दिशा में जाने के लिए बाध्य करती है। हम भ्रमित हो जाते हैं कि हम बुद्धि की सुनें या मन की। यह ही वह समय होता है जिस समय हम सतसंग में सुने ज्ञान का समुचित प्रयोग करें। राज दीदी कहती हैं हमारा चेतन मन एक हिस्सा है और सात हिस्से हमारा अवचेतन मन है। यह अवचेतन मन हमारे मन या हृदय से जुड़ा हुआ है। अंतः बुद्धि द्वारा कही बातों का विश्लेषण अवश्य करें पर करें वह ही जो आपका मन आपके दिल के माध्यम से कहता है।

जब हम दिल का अनुसरण करते हैं तो हमें खुशी मिलती है। इससे हमें शांति मिलती है, आनंद मिलता है। बच्चों आपको एक उदाहरण देते हैं, मान लो आप एक बहुत ही अच्छे कलाकार हैं पर आपकी बुद्धि आपको व्यापार करने के लिए कहती है क्योंकि व्यापार में पैसा है, समृद्धि है। आप एक सफल व्यवसायी हो सकते हैं लेकिन जब तक आप अपने मन का अनुसरण नहीं करेंगे, तब तक आप सुकून, मन का सुकून, दिल की खुशी नहीं पाएंगे। श्री इडियट्स फिल्म में आमिर खान कहते हैं, 'दिल का अनुसरण करें, सफलता आपका अनुसरण करेगी, यदि हम वो करते हैं जो हमें पसंद है, जिसके लिए हमारे मन में लगन है तो हमें सफलता अवश्य मिलेगी और हम निश्चित ही सार्थक जीवन जीएंगे इसलिए बच्चों, follow your passion |

॥नारायण नारायण॥



२०१९ का वर्ष जाते - जाते उपहार स्वरूप कुछ ऐसा दे गया जिसने हमें जीवन का एक नया तरीका सिखाया। दीदी के साथ ऑन लाइन सतसंग शुरू हुआ, दीदी के साथ ऑन, प्रश्नोत्तर का सिलसिला प्रारंभ हुआ। दीदी ने कई ऐसी तकनीकें बताईं जो इस प्रतिकूल समय में सतसंगियों को संतुलित रख सप्त सितारा और खुशहाल रख सकीं। यह स्तंभ इस बार एक नए कलेवर में। सतसंगियों ने अपने वट वृक्ष दीदी के छाँव तले सुकून की जिस बयार को महसूस किया प्रस्तुत है वह :-

कर्मों को संतुलित करने के लिए रात्रि ध्यान साधना

हर रात सोने से पहले अपने पलंग पर सीधे बैठें। तीन गहरी सांस लें। या व्यक्ति की कल्पना करें जिसे आपने अपने नकारात्मक शब्दों या कर्मों से आहत किया है। उन सभी परिवार के सदस्यों की भी कल्पना करें जो उस समय उपस्थित थे जब आप उस व्यक्ति पर क्रोध कर रहे थे। विशेष ध्यान उस व्यक्ति पर होना चाहिए जिसके साथ आपने नकारात्मक व्यवहार किया था, दूसरे परिवार के सदस्यों की उसके चारों ओर कल्पना करें।

अब कहें- 'नारायण मुझसे गलती हो गयी, कृपया मुझे माफ कर दीजिए'। (जब आप नारायण कह रहे हैं तो इसमें सभी परिवार के सदस्य आते हैं जो आपके नकारात्मक व्यवहार से आहत हुए हैं) जब आप माफी मांगते हैं तो ब्रह्मांड तुरंत आपको माफ कर देता है। ब्रह्मांड को धन्यवाद कहें।

व्यक्ति को 'आई लव यू आई लाइक यू आई रेस्पेक्ट, नारायण आपको सुख शांति, समृद्धि/ उन्नति, प्रगति, सेहत सफलता/ प्रेम आदर सम्मान विश्वास केयर, अच्छा नाम प्रसिद्धि धन का आशीर्वाद दें। व्यक्ति को जो उसके जीवन में सर्वाधिक चाहिए है उसका आशीर्वाद दें। ब्लेसिंग को कुछ देर दोहराएं और फिर राम राम २१, ५ मिनट/१० मिनट/ १५ मिनट करें। अच्छा रहेगा अगर २१ मिनट करते हैं।

आप ५ मिनट से शुरू कर सकते हैं फिर धीरे धीरे बढ़ा सकते हैं।

इस ध्यान साधना के दोहरे लाभ होंगे। यह आपके कर्मों को संतुलित करेगा और आप जो ब्लेसिंग ब्रह्मांड में भेजेंगे वह गुणा होकर आपके पास लौटेगी।

अपने कर्मों का हिसाब रखने के लिए हमेशा अपने पास नोटबुक रखें। अगर आप किसी को अपने कर्मों के माध्यम से हर्ट करते हैं तो अपने आप को रेड बॉल दें। अगर किसी को खुशी देते हैं, किसी के लिए प्रार्थना करते हैं या किसी की मदद करते हैं तो स्वयं को ग्रीन स्टार दें।

जैसे जैसे ग्रीन स्टार्स की संख्या बढ़ेगी बुरे कर्म आपके खाते से निकलते जाएंगे।

एक इंटरव्यू में एक अन्य ध्यान साधना बताते हुए दीदी ने कहा,

मन को शांत करने स्वयं को कोमल भावों से भरने की साधना

अपनी दैनिक क्रिया और साधनाओं को पूरा करने के पश्चात बिस्तर पर ही बैठे हुए अपनी रीढ़ को सीधा रखें। दोनों हाथ आसमान की ओर खुले रखें। एक लम्बी गहरी सांस लें और कहें, 'हे नारायण आपके आशीर्वाद से ब्रह्माण्ड में अवस्थित सकारात्मक ऊर्जा प्रेम, आदर, विश्वास, शांति, दया, ममता, सहनशीलता, विनम्रता, और अच्छे सकारात्मक संज्ञान मेरे भीतर लबालब भर दीजिए। आपको यह विजुलाइज करना है कि आपके क्राउन चक्र से यह सकारात्मक ऊर्जा आपके भीतर प्रवेश कर रही है और मेरे शरीर की हर कोशिका तक पहुँच रही है। आप नारायण से यह प्रार्थना भी करें कि जब मेरा मन इन सकारात्मक ऊर्जा से भर जाए तो मुझे बता दे। एक आधा मिनट के बाद आपको एक झटका महसूस होगा। अब आहिस्ते नारायण नारायण कहकर आँखें खोल दीजिए।

यह ध्यान आपको रात को सोने से पहले और सुबह उठते ही अवश्य करें, इसके अलावा जब भी आपका मन करे तब आप इसको कर सकते हैं।

आनंद की प्राप्ति के लिए यह ध्यान नियमित करें।

कभी न करें इन वाक्यों का उच्चारण

मेरी तो कोई सुनता नहीं

यह जीवन /यह कार्य बहुत मुश्किल है।

यह काम करने का मेरा मन नहीं है।

अध्यात्मिक गुरु राघव कहते हैं कि इन शब्दों का प्रयोग कभी न करें। ये आपके सिस्टम में एक स्थान बना लेंगे और आपको कोई काम नहीं करने देंगे।

श्रीकांत भोला

हैदराबाद के २४ वर्षीय उद्योगपति जन्मांध श्रीकांत भोला । जब उनका जन्म हुआ तब उनके माता - पिता बहुत ही गरीबी का जीवन बिता रहे थे। सबने उनके माता पिता से कहा कि वह इस जन्मांध बच्चे से छुटकारा पा लें पर किसी किसी तरह वह बच गए । नौवीं कक्षा में ९०% अंक लाने के बाद भी उन्हें १२वीं में विज्ञान वर्ग में जाने की अनुमति नहीं मिली। उनका मन उन्हें बार - बार विज्ञान पढ़ने के लिए प्रेरित करता । अंततः उन्होंने राज्य सरकार पर मुकदमा दायर कर दिया। ६ महीने की अथक लड़ाई के बाद उन्होंने केस जीता और विज्ञान वर्ग में प्रवेश ही नहीं लिया ९८% अंकों के साथ १२वीं की परीक्षा भी पास की ।

आईआईटी और एनआईटी ने जब उन्हें परीक्षा में नहीं बैठने दिया तब उन्होंने एमआईटी, स्टैंडफोर्ड , बर्कले, और कार्निजीमेलन जैसे विश्वविद्यालयों में आवेदन किया और वहाँ पर उनको एडमिशन मिला । अंततः उन्होंने एमआईटी को चुना। छात्रवृत्ति प्राप्त की। २०१२ में अमेरिका से लौटने के बाद उन्होंने बोल्लेंट इंडस्ट्रीज नाम से कंपनी खोली जिसके ६०% कर्मचारी शारीरिक रूप से विकलांग थे। वह सब शारीरिक रूप से विकलांग थे पर मानसिक रूप से आत्मविश्वास से भरे हुए । ४५० कर्मचारियों वाली यह कंपनी ५० करोड़ रुपये कमाए । अभी हाल ही में रतन टाटा ने उनकी कंपनी में बड़ा निवेश किया है ।

भोला के अनुसार, 'दुनिया ने कहा तुम कुछ नहीं कर सकते पर मेरे मन ने कहा, मैं सब कुछ कर सकता हूँ'। मैंने मन की सुनी और वह हासिल किया जो मैं पाना चाहता था।

बुद्धिमान लंबकण

किसी वन में हाथियों के झुंड के साथ उनका मुखिया चतुर्दन्त रहता था । एक बार पूरे वन में अकाल पड़ा जिसकी वजह पानी का अभाव हो गया. ऐसी विकट चतुर्दन्त ने समूह से कुछ हाथियों को नया जलाशय ढूँढने को कहा । कुछ ही समय बाद हाथियों के इस समूह ने एक विशाल जलाशय ढूँढ लिया।

सभी हाथी उस जलाशय के स्वच्छ और गहरे जल को देखकर प्रसन्न हो उठे. उन्होंने जी भरकर स्नान किया और पेट भरकर जल पीकर अपनी प्यास बुझाई. दिनभर जलक्रीड़ा करने के उपरांत सभी हाथी शाम को ही बाहर निकले और अपने-अपने निवास की ओर चल पड़े ।

जलाशय के चारों ओर मखमली घास भरी भूमि पर खरगोशों ने अपना निवास बना रखा था. हाथियों के

स्वेच्छापूर्वक इधर-उधर घुमते रहने के कारण हाथियों के पैरों के नीचे आकर बहुत-से खरगोश मर गए, कुछ के हाथ-पैर टूट गए और उनके कई घर भी नष्ट हो गए। हाथियों के झुंड के चले जाने के बाद बाकी बचे खरगोशों ने मिलकर एक सभा की। खरगोशों ने एक-दूसरे से कहा, 'यदि इन हाथियों का इसी प्रकार यहां प्रतिदिन आना-जाना जारी रहेगा तो हमारा तो अस्तित्व ही मिट जाएगा'।

अपने जाति बंधुओं की चिंता से दुखी एक वृद्ध और बुद्धिमान खरगोश बोला, 'हाथियों को यहां से भगाने का एक उपाय है। हमारा राजा विजयदत्त चंद्रमा के मंडल में निवास करता है। हमारा कोई एक बुद्धिमान साथी खरगोश चंद्रमा का दूत बनकर हाथियों के झुंड के स्वामी के पास जाकर उसे चन्द्रमा का संदेश दे कि इस सरोवर के चारों ओर उसके कुटुम्बियों का निवास है। इसलिए हाथियों के पैरों से उनके कुचले जाने की आशंका है। अतः चन्द्रमा उन्हें यह आदेश देता है की वह इस सरोवर के आसपास न आए-जाएं। आज्ञा को न मानने का परिणाम भयंकर हो सकता है'।

सभा में उपस्थित खरगोशों को यह सुझाव काफी पसंद आया और इस काम के लिए लंबकर्ण नामक खरगोश को दूत बनाकर भेजने का निश्चय किया गया। लंबकर्ण काफी चतुर और बुद्धिमान था।

सांयकाल होते ही लंबकर्ण हाथियों के निवास के समीप पहुंचकर एक उंचे टीले पर चढ़ गया और उंचे स्वर में कहने लगा, 'हाथियों! तुम्हारा मुखिया कहां है? उसे शीघ्र मेरे सामने उपस्थित करो।' लंबकर्ण की कर्कश आवाज से हाथियों में खलबली और दहशत फैलने लगी। तभी चतुर्दन्त भी वहां आ पहुंचा और बोला, 'कहो! कौन हो तुम, इन हाथियों का मुखिया मैं हूँ।' अच्छा तो तुम हो इनके मुखिया। देखो, जिस सरोवर पर तुम्हारे हाथियों ने आज दिनभर उपद्रव मचाया है, कल से तुम उस सरोवर के आस पास भी नहीं जाओगे। अपने साथियों को अच्छी तरह से समझा दो वरना तुम्हारे जाति बंधुओं का विनाश हो जाएगा।' लंबकर्ण ने निडर होकर कहा।

'तुम कौन हो, अपना परिचय दो?' चतुर्दन्त ने लंबकर्ण से कहा।

'तुम मुझे नहीं जानते, मैं चंद्रमंडल का निवासी हूँ और चंद्रमा का आदेश सुनाने के लिए तुम्हारे पास भेजा गया हूँ। भगवान चन्द्रदेव अपने जाति-बंधुओं के विनाश से दुखी होकर, अपने परिजनों को सांतवना और आश्वासन देने के लिए सरोवर में आए हुए हैं, अगर विश्वास नहीं हो रहा तो चलकर स्वयं देख लो।' लंबकर्ण कड़कती आवाज में कह रहा था।

हाथियों के मुखिया चतुर्दन्त की उत्सुकता पर लंबकर्ण उसे अपने साथ ले गया और सरोवर के किनारे खड़ा होकर चतुर्दन्त से बोला, 'गौर से देखो, भगवान चंद्रमा क्रोध से किस प्रकार कांप रहे हैं।'

चतुर्दन्त ने वायुवेग से पानी में हिलते चन्द्रमा को देखा तो डरकर बोला, 'भगवान! क्षमा करें! कल से हम इधर नहीं आएंगे और आपकी आज्ञा का पालन करेंगे।' लंबकर्ण अपने उद्देश्य में सफल लौटा और अपने साथी खरगोशों का सारा वृत्तान्त कह सुनाया। इसके उपरांत वह निश्चिंतता का जीवन व्यतीत करने लगे। इस तरह अपने बुद्धि चातुर्य के बल पर चतुर्दन्त ने अपने समूह की रक्षा की।

स्टार बर्क्स की कहानी

स्टार बर्क्स जो की अमेरिका की एक बहुत बड़ी कॉफी स्टोर चैन है। इस कंपनी के मालिक होवार्ड शुल्ज अपनी पुस्तक 'पोर योर हार्ट इन टू इट' में मन की आवाज के ऊपर अपने विचार लिखते हुए एक वाक्य का वर्णन करते हैं। यह बात १९९६ की स्टार बर्क्स के मालिकों ने अपने पहले अंतर्राष्ट्रीय स्टोर को खोलने के लिए एक्सपर्ट्स की एक मीटिंग बुलाई। काफी रिसर्च के बाद एक्सपर्ट्स ने अपनी राय दी की स्टार बर्क्स को टोकियो (जापान) में अपना स्टोर नहीं खोलना चाहिए।

उन्होंने अपने बात की पुष्टि के लिए जो कारण बताए वह इस तरह थे:- जापान टोकियो में रियलस्टेट बहुत महंगा है इसलिए वहाँ स्टार बर्क्स के जैसे बड़े- बड़े स्टोर जो अमेरिका में हैं वैसे बड़े स्टोर खोलना संभव नहीं होगा। वर्तमान स्टैंडर्ड से छोटा स्टोर खोलना कंपनी की शाख के लिए उचित नहीं होगा। स्टार बर्क्स में उस समय नौ स्मोकिंग पालिसी थी जो कि जापान की पालिसी के एकदम विपरीत थी। ऐसे जापानी लोग स्टार बर्क्स में नहीं आएंगे। अमेरिका स्थित स्टार बर्क्स में ८०% बिजनेस लोग टेक अवे कॉफी का है, जिसके अनुसार लोग कॉफी पैक कराकर ले जाते हैं क्योंकि जापान में चलते-फिरते या कार में बैठकर खाने पीने का चलन नहीं है तो टोकियो में स्टार बर्क्स सफल नहीं रहेगा। अगस्त का महीना तो टोकियो में बहुत अधिक गर्म होता है ऐसे में कॉफी चैन की शुरुआत करना नासमझी है। होवार्ड शुल्ज ने एक्सपर्ट्स की राय सुनी। पर उनका मन उन्हें कुछ और ही करने को कह रहा था।

अंततः शुल्ज ने अपने मन की बात को माना और टोकियो में स्टार बर्क्स का स्टोर खोलने का मन बना लिया। मन की आवाज सफलता की आवाज बन गई और टोकियो में स्टोर खुलते ही सैकड़ों लोग स्टोर में आने लगे। पहले ही दिन स्टोर ने सफलता के सभी कीर्तिमान तोड़ दिए। मन की आवाज आपके भीतर आत्मविश्वास जगाती है और आत्मविश्वास से भरा व्यक्ति जीवन में वह सब हासिल कर सकता। किसी शायर ने क्या खूब लिखा है, 'सीढीयाँ उसी को हो मुबारक जो छत पर जाने की तमन्ना रखते हैं वह अपना रास्ता खुद बनाते हैं जो आसमानों को छूने की तमन्ना रखते हैं।

बाबूलाल जी मालपानी और अयोध्या जी मालपानी को विवाह वर्षगांठ (३० नवंबर) पर सुख, शांति, समृद्धि, उन्नति, प्रगति, सेहत, सफलता भरे सप्त सितारा जीवन का दिव्य नारायण आशीर्वाद।

बनवारीलाल जी तापड़िया एवं सुषमाजी तापड़िया को विवाह वर्षगांठ (३० नवंबर) सुख, शांति, समृद्धि, उन्नति, प्रगति, सेहत, सफलता भरे सप्तसितारा जीवन का दिव्य नारायण आशीर्वाद।



॥ ॐ ॥

Pavaan Vani

Dear Narayan Premiyan,

॥ Narayan Narayan ॥

Recently, Vijayalaxmi a character from the Narayan Shastra gave a very insightful and beautiful message. Vijayalaxmi says “When it comes to relationship be flexible like the serene river, but when it comes to principles be steadfast and staunch like the mountain.

Vijayalaxmiji’s message inspired me and gave a new direction to life. In everyday life we encounter the conflict between the mind and the heart. Sometimes our decisions are based on our intellect but at times we follow our heart. Satsang says whenever you have to choose between the intellect (mind) and the heart always follow your heart because the heart is the place where that supreme Father resides and whatever comes from the heart is the voice of God, is the voice of welfare for all, voice of truth, voice of goodness and is the path to a meaningful life.

This human life is by itself a process of self improvement and this process is possible at its peak only when mutual relationships are filled with love, respect, trust and appreciation. This can happen only if you keep your relationship away from the judgement of right and wrong and listen to your mind thinking that this relationship is mine. Relationship being mine, it is my duty to give it best with body, mind and wealth. Once you start on this path, life is filled with happiness. Every field of life is filled with success. If you are healthy with your mind and body, prosperity follows in abundance.

Your heart is your compass and when you lead your life listening to it then, dear readers, you will easily become entitled to a seven- star life.

Rest Fine,

R. Modi

R Modi

॥ नारायण नारायण ॥

CO-EDITOR

Deepti Shukla 09869076902

EDITORIAL TEAM

Vidya Shastry 09821327562
Mona Rauka 09821502064

Main Office

Rajasthan Mandal Office, Basement Rajnigandha
Building, Krishna Vatika Marg, Gokuldham,
Goregaon (East), Mumbai - 400 063.

Editorial Office

Shreyas Bunglow No 70/74 Near Mangal Murti
Hospital, Gorai link Road, Borivali (W) Mumbai -92.

Regional Office

| | |
|----------------------------------|---------------|
| Amravati - Tarulata Agarwal | : 9422855590 |
| Ahmedabad - C. A. Jaiwini Shah | : 9712945552 |
| Akola - Shobha Agarwal | : 9423102461 |
| Agra - Anjana Mittal | : 9368028590 |
| Baroda - Deepa Agarwal | : 9327784837 |
| Bangalore - Shubhani Agarwal | : 9341402211 |
| Bangalore - Kanishka Poddar | : 70455 89451 |
| Bhilwada - Rekha Choudhary | : 8947036241 |
| Basti - Poonam Gadia | : 9839582411 |
| Bhandra - Geeta Sarda | : 9371323367 |
| Banaras - Anita Bhalotia | : 9918388543 |
| Delhi - Megha Gupta | : 9968696600 |
| Delhi - Nisha Goyal | : 8851220632 |
| Delhi - Minu Kaushal | : 9717650598 |
| Dhulia - Kalpana Chourdia | : 9421822478 |
| Dibrugadh - Nirmala Kedia | : 8454875517 |
| Dhanbad - Vinita Dudhani | : 9431160611 |
| Devria - Jyoti Chabria | : 7607004420 |
| Gudgaon - Sheetal Sharma | : 9910997047 |
| Gondia - Pooja Agarwal | : 9326811588 |
| Gorakhpur - Savita Nalia | : 9807099210 |
| Goa - Renu Chopra | : 9967790505 |
| Gouhati - Sarla Lahoti | : 9435042637 |
| Ghaziabad - Karuna Agarwal | : 9899026607 |
| Hyderabad - Snehlata Kedia | : 9247819681 |
| Indore - Dhanshree Shilakar | : 9324799502 |
| Ichalkaranji - Jayprakash Goenka | : 9422043578 |
| Jaipur - Sunita Sharma | : 9828405616 |
| Jaipur - Priti Sharma | : 7792038373 |
| Jaigaon - Kala Agarwal | : 9325038277 |
| Kolkatta - Sweta Kedia | : 9831543533 |
| Kolkatta - Sangita Chandak | : 9330701290 |
| Khamgaon - Pradeep Garodia | : 8149738686 |
| Kolhapur - Jayprakash Goenka | : 9422043578 |
| Latur - Jyoti Butada | : 9657656991 |
| Malegaon - Rekha Garaodia | : 9595659042 |
| Malegaon - Aarti Choudhari | : 9673519641 |
| Morbi - Kalpana Joshi | : 8469927279 |
| Nagpur - Sudha Agarwal | : 9373101818 |
| Navalgadh - Mamta Singodhia | : 9460844144 |
| Nanded - Chanda Kabra | : 9422415436 |
| Nashik - Sunita Agarwal | : 9892344435 |
| Pune - Abha Choudhary | : 9373161261 |
| Patna - Arvindkumar | : 9422126725 |
| Pichhora - Smita Bhartiya | : 9420068183 |
| Raipur - Aditi Agarwal | : 7898588999 |
| Ranchi - Anand Choudhary | : 9431115477 |
| Ramgadh - Purvi Agrwal | : 9661515156 |
| Surat - Ranjana Agrwal | : 9328199171 |
| Sikar - Sarika Goyal | : 9462113527 |
| Sikar - Sushma Agrwal | : 9320066700 |
| Siligudi - Aakaksha Mundhda | : 9564025556 |
| Sholapur - Suvarna Valdawa | : 9561414443 |
| Udaipur - Guntvanti Goyal | : 9223563020 |
| Vishakhapattanam - Manju Gupta | : 9848936660 |
| Vijaywada - Kiran Zawar | : 9703933740 |
| vatmal - Vandana Suchak | : 9325218899 |

International Office

| | |
|-------------------------------|-------------------|
| Nepal - Richa Kedia | : +977985-1132261 |
| Australia - Ranjana Modi | : +61470045681 |
| Bangkok - Gayatri Agarwal | : 0066897604198 |
| Canada - Pooja Anand | : +14168547020 |
| Dubai - Vimla Poddar | : 00971528371106 |
| Sharjah - Shilpa Manjare | : 00971501752655 |
| Jakarta - Apkesha Jogani | : 09324889800 |
| London - C.A. Akshata Agarwal | : 00447828015548 |
| Singapore - Pooja Agarwal | : +659145 4445 |
| America - Sneha Agarwal | : +16147873341 |

Editorial

Dear Readers,

The heart and the mind are the two horses, on whose coordination the cart of our life gallops smoothly. To live a meaningful life, it is necessary that there is proper harmony between them. If our mind runs in one direction at a rapid pace and our heart directs us to take another direction, then we will be deprived of the joys of life. Sometimes we have to prioritize our intelligence and sometimes we have to hold the unbridled horse of the heart. In this issue of Satyug, we will try to know about this combination of mind and heart.

With best wishes that you keep a balance between your heart and mind and march towards a seven- star life

Yours own,
Sandhya Gupta

To get

important message and information from
NRSP Please Register yourself on 08369501979
Please Save this no. in your contact list so that you can
get all official broadcast from NRSP



we are on net



narayanreikisatsangparivar@narayanreiki

[©] *Publisher* **Narayan Reiki Satsang Parivar,**
Printer - Shrirang Printers Pvt. Ltd., Mumbai.
Call : 022-67847777

|| Narayan Narayan ||

Call of Satyug

॥ ॐ ॥

The mind (Intellect) and the heart are two such elements on which rest the foundation of our entire life. Generally, the mind and the heart are considered to be the same, but there is a very subtle difference between the two which reveals the vast difference between these two. Intellect (mind) is your ability, on the basis of which you test every situation, object, person on the test of rationality and then decide about it. But the heart is attached to our emotions, to our impulse, to our heart. The mind does not argue, it accepts what affects it. The intellect develops the judgment of right and wrong in the mind and develops logical ability within the human being on the basis of which a person decides the appropriate from the inappropriate and this paves the way to success. But to follow the heart is the best way to lead a meaningful life.

Wisdom increases your work efficiency and the heart increases your behavioral efficiency. The intellect is the measure of right and wrong and the heart is an expression of your emotions. The heart is attached to the soul and the intellect is attached to the body. The effect of the heart is comprehensive. The more you are connected by heart, the more you have the ability to influence the person in front as well as the situation. You must have seen and experienced that for a child a mother is very precious, whether she is intelligent or not ... because the mother is attached to her child with emotions and when there is an amalgamation of the heart and its emotions then relationships flower with unconditional affinity, trust thrives, love thrives, respect flourishes and the persons involved becomes very happy. A happy heart keeps the body and mind and wealth healthy and helps one to lead a meaningful Life. The deeper the connection of the heart, the greater will be its effect.

The tendency of the heart is to remain happy and joyous. The heart is gentle and pure. Every endeavor is successful when it is done by following the heart and, it is the best. The heart is the most precious gift of God. The heart is the identity of a person, so it is essential to do the sadhana and meditation because our heart is directly connected to that God.

Every person wants to live a successful and meaningful life. For this it is essential to strike a balance between the mind and the heart. This balance will come when the reasoning of the mind and the emotions and the impulsiveness of the heart are added to the arguments given by the intellect. Definitely listen to the mind before deciding on anything. The voice of the heart is the voice of the supreme power within you that inspires you to do what is right and for the good of all. If there is a war between your mind and your heart, always listen to the heart because heart is the basis of your success.

The techniques prescribed by Raj Didi and Narayana Reiki Satsang Parivar are best

॥ ॐ ॥

for bringing coordination between the heart and the mind. The morning prayers which one has to say as soon as you wake up, the affirmations given in self-healing Prayer, Shanti Kalash meditation and the other meditation prescribed at night beautifully balances the heart and the mind.

Our mind and heart coordinates smoothly only when our body is healthy and for the body to be healthy yoga, pranayama and morning walk, swimming or any other type of exercise is essential. The illness of the body affects both our intellect and our heart. You must have often felt that when we are not physically healthy, then our heart also does not feel good and even with intelligence we are not able to take right and proper decisions.

Meditation helps in balancing the dilemma and the debate between the heart and the mind and helps a person to take the appropriate decisions by logically balancing between the heart and intellect.

Prayer, meditation, and proper physical exercise keep our body healthy and in a healthy body resides a healthy heart. A healthy mind with the proper coordination of a healthy body, heart and intellect paves the way for a meaningful and successful life.

Narayan Utsav 2020

Date : 8th November
Time : 10.55am

Day : Sunday
Place: U tube



The Sadhana which has to be practiced regularly by satsangis for Narayan Utsav 2020 :

Chakra healing with Affirmation :-

Narayan Blessings with Narayan Shakti (self full name)

is calm and joyous. I see Narayan in all living beings

My relationships with everyone is filled with love, respect, faith and care.

Ram Ram 21/56/108 on each chakra as per your wish

॥ नारायण नारायण ॥

Wisdom Box (Glimpses of Satsang)

॥ ॐ ॥

The main motive of Narayan reiki Satsang Parivaar is that everyone should lead simple , smooth, beautiful healthy, successful, enriched and meaningful life (sahaj , saral, sunder , swasth, safal, sampurn, sarthak jeevan) everyone should lead a life filled with abundance, this is our prayer to **Narayan**.

In our weekly Satsangs, Didi conveys the messages through short stories, mostly based on true life anecdotes. If satsangis imbibe the messages then they would surely attract a seven star life.

Here we present few messages of the Satsangs of the recent month:-

- 1) It is mandatory to be joyous to lead a meaningful life. It is easy to be happy, if you adopt two things in life, first is Gratitude to God and second is to celebrate every small thing in life.
- 2) Complaints, hatred, jealousy are negative emotions which like termites, enter our bodies and make us ill.
It affects our health, wealth, happiness and relationships. We should remove such negative emotions from our system and adopt appreciation.
- 3) When you think about the good qualities of the other persons you get a smile on your face, even before you appreciate the other person and this is the blessings which you receive from the universe.
- 4) You are filled with positive energy.
- 5) You feel good when you appreciate another person.
- 6) When you praise the other person, you give joy to him and this joy returns to you in multiples.
- 7) When you appreciate another person he also appreciates you.
- 8) When you appreciate your relationships, your health improves and you prosper in life.
- 9) When you receive joy and appreciation your tolerance level becomes multiple.
- 10) Imagine that you have packed all your negative emotions in a bag and removed them from your life. Now imagine that blessings of your Guru, your parents, your elders are showering on you because you have imbibed appreciation in your life.
- 11) Begin with appreciating your family, your life partner, your children, your near dear ones, your family members and lead a healthy, joyous, harmonious and prosperous life.

॥नारायण नारायण॥

- 12) Try to resolve the problems immediately. If we do not face the problem immediately, it multiplies. If we avoid the person related to our problems then his anger and ego is instigated.
- 13) If you come across any problem, take a glass of water, pray to God, surrender to him. Drink water and then go and meet the concerned person, mostly your problem will be resolved.

Didi shared techniques to become successful in life:-

- A) Love the gift of life given by The God.
 - B) Do unto others as you would like them to do unto you.
 - C) Do your work with joy and enthusiasm.
 - D) Keep positive attitude towards everyone.
- 14) Solution visiting minutes: - Write down all your problems on a paper, read them, remove the ones which are not worth any thought, surrender the problems which have no solutions to **Narayan**. For the remaining problems, fix a timing of 15 minutes, sit down at one place during that time and ponder over them, try to resolve them. When you run away from the problems, then you get tension and stress. These negative vibrations affect your health wealth and relationships. These negative vibrations move out of your body and pollute the atmosphere of your home. In such environment children are not able to concentrate on their studies. It also affects your success and progress
 - 15) It is mentioned in Bhagwat Geeta whatever happened in the past was good, what is happening in the present is also Good, what will happen in the future shall be Good. This will be manifested only when we do good work.
 - 16) Words are powerful they have the power to transform your life so always use good positive words.
 - 17) 'Yes 'I can do'' is magic mantra.
'Ask' and 'seek' are two positive words.
 - 18) You start getting proof of things in life, about which you believe in...
 - 19) To improve the quality of your work, do introspection daily. Friends we are in this world for a short time, before it gets over develop your qualities and be a reason of joy, smile and success in someone's life.

Youth Desk

Mind and intellect



Every human being is blessed with the abilities of mind and intellect. An important fact is that our intellect is influenced by our state of mind. As is the mind, so becomes the intellect. What should be done to keep our intellect on the right path? First and foremost, we need to train our mind.

How to discipline the mind?

- ▶ Think and introspect what subjects are trapping your mind?
- ▶ Have your desires camouflaged your mind?
- ▶ Has your greed deprived you of your credentials?
- ▶ Have your anger or inappropriate words caused distance from the most benevolent person of your life?
- ▶ Have you not ignored the inner voice of someone in your pride?
- ▶ Have you sacrificed your purity because of your ego?

These questions will once again introduce you to the pure powerful soul or your pure form and once your soul is awakened, then the intellect will automatically tread the right path because there is nothing more powerful than the soul.

God has given us the power of mind and intellect to make good use of it. These are the only resources with which we are connected to the outer and inner worlds.

The devoted and positive intellect always controls the mind and adopts those ideals and paths that lead on the path of making human life meaningful. We are able to achieve the highest goal for which we have taken birth.

On the other hand, if the mind is free and does its own arbitrariness. In such a case, the intellect gets confused and loses the wisdom to choose what is right. For example if your friend calls you at 8 pm on a weekday and asks you to come for a late night movie then what would your wisdom answer? You listen to your mind and go for the show or your disciplined mind your intellect answers that this will upset your morning schedule. If you are a student, then you will not be able to focus, or you will yawn during the class due to lack of sleep. If you are a working professional, then you will not be able to give your hundred percent due to lethargy.

The question arises as how to manage the mind?

In the SrimadBhagavad Gita composed by Veda Vyasa, Vasudev Shri Krishna guides in very simple words -

A human being should subdue all his senses withdraw his mind and surrender to me because the man whose senses are subdued, possesses steady intellect. So what does our youth need to do - **The mind, along with the senses, needs to be tamed because the intellect is beyond the mind, while the soul is beyond the intellect, so awaken your inner power and conquer the mind by the intellect and always follow the right path.**

There is a well maintained garden next to my house. The other day there was a storm with thunder showers, gusty winds at night. The next day we woke up to see the garden in a complete mess. The outside storm had rattled up the well-maintained garden. There were leaves, broken branches, mud and dirt. The gardener entered, gazed and started cleaning.

Isn't the same thing we experience in life. There are times when the storm raging between the brain and the heart rattles up our calm and joyous life. We are disturbed. But by following the principles of satsang, we should bring things in order immediately.

This time the topic of our Satyug is mind and heart.

We attend satsang, we read good books, we are in the company of good but at times, unavoidable circumstances may cause disturbance in our life. These are times when difference of opinion arises between the heart and the mind. The mind harping on the experiences guides us in one direction but the heart tells us to take a different path. We feel confused whether to listen to our mind or follow the heart.

It is during these times, that the role of satsang we hear, follow and gain knowledge comes in play.

Rajdidi says our conscious mind is one part and the balance seven parts are the subconscious mind. This subconscious mind is connected to the heart. So, analyze what the mind says but follow your heart.

When we follow the heart it gives us joy, it gives us peace and it gives us happiness.

An example to quote for you children. You are a wonderful artist, but your mind suggest you to pursue a career in business because that is where money is wealth is, you may be successful business man, but until you follow your heart you will not find the solace, the solace of mind, the enjoyment at heart. Like in the movie Three Idiots Aamir Khan says follow your heart, success will follow. If we do what we like, what we are passionate about, we will find success and also lead a Meaningful Life.

So, follow your passion.

Under The Guidance of Rajdidi

॥ 卐 ॥

The outgoing year 2019, gifted us with something which has changed our outlook and taught us a new way of life. Online Satsang started, online Question & Answer session with Didi began. Didi told many such techniques following which the Satsangi's could lead a balanced and a seven star and happy life in these adverse times also. This column this time comes to you in this new format. Under the Guidance of Rajdidi, the Satsangis have experienced serenity. Presenting such techniques

Night meditation to balance karmas

Every night before sleeping

Sit straight on your bed take three deep breaths visualise the person whom you have hurt by your negative words or actions also imagine the other family members who were present when you were angry on that member.

P+The focus should be on the person with whom you behaved in negative manner, imagine other family members around him.

Now say **Narayan I am sorry please forgive me.** (When you address as Narayan all family members who were affected by your negative behaviour are included) when you seek forgiveness the universe immediately forgives you.

Say, thank you to the universe.

Bless the person with-**I love you, like you, respect you**

Narayan bless you with sukh shanti Samruddhi / unnati pragarti sehat saflata / love, respect faith and care.

Bless the person with, what you feel he needs most in his life.

Repeat the blessings few times then do Ram Ram 21 continue this for 5 / 10/ 15 minutes best is 21 minutes.

You can begin with 5minutes then slowly increase your time

This meditation will have double benefits it would balance your karmas and the blessings which you send in the universe will return to you in multiples

Always keep note book to keep a record of your actions. If you hurt someone with your words or actions give yourself a red ball if you give joy to someone, did Prayers' for someone or helped someone then give yourself a green star.

As the number of green stars will increase the bad karmas will be released from your

॥नारायण नारायण॥



karmic accounts.

In an interview Rajdidi suggested another sadhana to keep the mind peaceful and to fill oneself with positive emotions.

Technique

Before going to sleep, sit erect with spine 90° position and take a deep breath and say- Narayan with your blessings the Universal positive energies is filling me to the brim with love, peace, trust, compassion, tolerance, humility and good affirmations. **(Narayan aapke ashirwad se brahmand mei avasisth sakaratmak urza prem, Shanti, vishwas, daya, sahanheelata, vinamrata, good affirmations mere bheetar labhalab bhardijiye.)**

You must visualize that these positive emotions are entering from your crown chakra and touching every cell of your body. Pray to Narayan that when these positive energies have filled inside you up to the brim, he alerts you. After about a minute you will experience vibrations. Slowly saying Narayan-Narayan open your eyes.

This meditation is to be done before going to bed and as soon as you wake up. Apart from that you can do this sadhana whenever you feel you need to energize yourself. For infinite joy within you have to practice this meditation regularly'

Never Say these sentences

No one listens to me.

This life/ this work is very difficult

I am not interested in doing this work

Spiritual Guru Raghav says that never use these words. When you use these words they will make a place in your system and will make you unsuccessful in all your endeavors.

Inspirational Memoirs

॥ ॐ ॥

Srikant Bola

A 24 years old blind entrepreneur from Hyderabad. When he was born, his parents were earning a very merge income. His parents were advised to get rid of him, but somehow, he survived.

Despite getting 90% in class 10th, he was not allowed to choose the science stream for 12th std. But his heart was in pursuing science stream. So, he sued the state govt and fought for 6 months and won the case. He took the science stream in the XIIth and scored 98%.

When the IITs and NITs didn't give him hall ticket for writing competitive exams ,he applied overseas ,and got selected in four of the best colleges ever created on earth , MIT, Stanford, Berkeley and Carnegie Mellon. He chose the Massachusetts Institute of technology, received a scholarship and was MITs FIRST INTERNATIONAL STUDENT.

After returning from US in 2012, he launched BOLLANTLNDUSTRIES, where 60% of employees arepoor, physically challenged .This 450 employees company is now worth Rs 50 crores, and recently RATAN TATA invested in his venture.

As per him," I was made blind by the perception of people". When the world said to him that you can't do anything, BOLLA said," but, I look back at the world and said- I can do anything".

Wise Lambakarna

In a forest, lived the head of elephants named Chaturdant along with his herd. Once because of famine there was dearth of water in the entire forest. Chaturdant asked few members of his herd to go in search of a new reservoir. Shortly this group came across a huge reservoir.

All the elephants were very happy to see the clean and deep water of the reservoir. They bathed to their heart content in the deep reservoir and quenched their thirst with the clean water. After playing in the water all day long, in the evening the elephants came out and started walking towards their stay area.

In the velvety grassland around the reservoir the rabbits had made their habitat. With

॥नारायण नारायण॥

the elephants moving around the reservoir freely many rabbits came under the feet of these elephants and lost their lives. Some broke their hands and legs and many lost their homes too. After the herd of elephants had left the place the remaining rabbits gathered for a meeting. They said to each other, "If the herd of elephants keeps visiting this reservoir daily then our existence will be endangered."

An old and intelligent rabbit, saddened by the worries of his brethren said, "There is a way to drive these elephants away from here." Our king Vijayadatt resides in the moon's mantle. One of our wise companions, will become the envoy of the moon and go to the head of the elephant herd, and give him the message of the moon, that his relatives have inhabited the grassland in and around this lake. So, there is a possibility of them being crushed under the feet of the elephants. Therefore, the moon orders them not to come around this lake. The consequences of disobeying the command may be terrible.

The rabbits present in the meeting liked this suggestion and decided to send a rabbit named Lombokarna as an envoy for this task. Lombokarna was a clever and intelligent rabbit.

As the evening approached, Lombokarna reached near the place where the elephants resided and climbed on a high mound and spoke loudly- Elephants! Where is your leader? Ask him to present himself before me soon'. Due to the loud and stern voice of Lombokarna, there was panic in the elephant herd. Chaturdant also came there and said, 'Say! Who are you, I am the head of these elephants?' "Well you are the head of this herd. See, the lake on which your elephants have raged for the whole day, from tomorrow onwards you will not go there. Explain this to your companions well or else your brothers will be destroyed, said Lombokarna undaunted.

"Who are you? Introduce yourself" Chaturdant said to Lombokarna

You don't know me. I am a resident of the moon and I have come here to deliver the order of the Moon God. The Moon God is very disturbed with the destruction of his brethren and has come to console his relatives. If you do not believe me go and see for yourself said Lombokarna in a commanding voice.

To satisfy the curiosity of the head of the elephant herd Chaturdant, Lombokarna accompanied him to the edge of the reservoir lake and showed him the reflection of the moon in the water and said, "See the Moon God is trembling in anger"

Chaturdant saw the reflection of the Moon trembling because of the breeze in water and got scared and said, "Lord! Pardon! We will not come here from tomorrow and follow your orders'. Lombokarna returned successful in his objective and narrated the whole story to his fellow rabbits. After this, he started living a life of assurance. In this way, on the strength of his wisdom tact, Chaturdant protected his group.

Story of Starbucks

Starbucks is a one of the biggest multinational coffee house chain with its headquarters in USA. The, **CEO** of this company **Howard Schultz** in his book “Pour your heart into it” has expressed his thoughts on following the voice of your heart giving an anecdote. In the year 1996 the owners of Starbucks called a meeting of experts to open their first international store. After much research, experts gave their opinion that Starbucks should not open its store in Tokyo (Japan).

Validating their decision, they gave the following reasons: - The Real estate in Japan Tokyo is very expensive, so it will not be possible to open big stores like the ones Starbucks have in America. Opening a store smaller than the current standard will not be appropriate for the company’s brand name. Starbucks had a ‘No smoking’ policy at that time, which was completely opposite to the Japanese policy. The smoking Japanese will not come to Starbucks. 40% of the Starbucks business in the American came from take away coffee, wherein people pack their coffee and consume it as take away, but in Japan there was no trend of eating food while walking or sitting in a car, so Starbucks will not be successful in Tokyo. The month of August was very warm in Tokyo, so it was not a wise decision to start a coffee chain in Tokyo. Howard Schultz heard the opinions of the experts. But his heart was telling him to do something else.

Ultimately, Schultz agreed to follow his heart and made up his mind to open a Starbucks store in Tokyo. The voice of the heart became the voice of success and hundreds of people started coming to the store as soon as the store opened in Tokyo. On the first day, the store broke all the records. The voice of the heart arouses confidence in you and a person with confidence can achieve everything he desires in his life. A poet has very beautifully penned, “Stairs are a blessing for those who wish to go to the roof, they who want to touch the infinite sky make their own way.”

Narayan divine blessings with Narayan Shakti to Babulal Malpani and Ayodhya Malpani on their Wedding Anniversary (30th November) for a seven star life and success in all spheres.

Narayan divine blessings with Narayan Shakti to Banwarilal Taparia and Sushma Taparia on their Wedding Anniversary Blessings (30th November) for a seven star life and success in all spheres.

Narayan Geet

Narayan Narayan ka udghoshjahan
Ram Rammadhurdhunvahan
Sabkokhushiyandetaaparampaar
Jeevan mailatasabke jo bahaar
Kholeunnati, pragati, safaltake dwar
Banata Satyug sasansar

Wo hai wo haihamaara Narayan Reiki Satsang Parivar
Hamara NRSP PyaraNRSP,Nyara NRSP
Pyar, adar, vishwasbadhata
Rishton ko majbootbanata,majbootbanata,
Paropkar ka bhavjagata
Sachhayee, namrata, sevameivishwasbadhata
Sat ko kartaangikar
Banata Satyug sasansar

Vo hai, vohai,hamara Narayan Reiki Satsang Parivar
Satsang Parivar
Muskanke raj batata
Tan, man, dhan se denasikhlata
Humkojeensikhlata
Gharghar prem ke deep jalata
Man, kram se jo hum detehai
Vahi lout karaata, vahi lout kataata
Banata Satyug sasansar

Vo hai, vohaihamara Narayan Reiki Satsang Parivar
NRSP, NRSP



SAMANKTM
Nurturing your health



NEW ADDITION

कीजिए दिन की शुरुआत
समंक चाय की चुस्की के साथ



श्री. कमल पोद्दार

हमसे जुडने के लिए संपर्क करे:

+91 7498 24 24 24 | info@samankindia.com | www.samankindia.com

SAMANK CONSUMER PRODUCTS PVT. LTD.

Shree Shakambhari Corporate Park, Plot No. 156-158, J B Nagar,
Andheri(E), Mumbai - 400099, India.